RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
जनवरी
27
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

By Ankit Avasthi Sir

तमिलनाडु में लौह युग की खोज / Tamil Nadu's Iron Age Discovery

संदर्भ:

'**Antiquity of Iron: Recent Radiometric Dates from Tamil Nadu**' शीर्षक से प्रकाशित एक ऐतिहासिक अध्ययन ने तमिलनाडु में **3,345 ईसा पूर्व** से लौह तकनीक के प्रमाण उजागर किए हैं। यह खोज भारतीय और वैश्विक लौह युग की समय-रेखा और उत्पत्ति संबंधी धारणाओं को नया आयाम देती है।

मुख्य निष्कर्ष:

1. **तमिलनाडु में प्राचीन लौह प्रौद्योगिकी:**
   - तमिलनाडु में लौह तकनीक का अस्तित्व 3345 ईसा पूर्व तक पाया गया है।
   - सिवागलई स्थल से मिले लकड़ी का कोयला और मिट्टी के बर्तन 2953 ईसा पूर्व से 3345 ईसा पूर्व के बीच के हैं, जो वैश्विक स्तर पर लौह प्रौद्योगिकी के सबसे प्राचीन साक्ष्य हैं।
2. **सबसे पुराना दफन प्रमाण:**
   - किलनामंडी में मिला 1692 ईसा पूर्व का सार्कोफेगस (पत्थर का ताबूत) दफन, तमिलनाडु का सबसे पुराना पाया गया है।
3. **लौह गलन भट्टियां:**
   - मयिलाडुमपरई, किलनामंडी, पेरुंगलूर जैसे स्थलों पर लौह-धातु गलाने वाली भट्टियां मिली हैं।
   - यह क्षेत्र की तकनीकी उन्नति को दर्शाता है, जो मजबूत लौह उपकरण और हथियार बनाने में सक्षम था।

भारत में लौह युग:

- लौह युग भारत में एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी अवधि थी, जिसमें लौह औजारों और हथियारों का व्यापक उपयोग हुआ। इसने कृषि, युद्ध और सामाजिक संरचनाओं में बड़ी प्रगति लाई।
- पहले माना जाता था कि भारत में लौह युग की शुरुआत 1500 से 2000 ईसा पूर्व के बीच हुई थी।
- हालांकि, तमिलनाडु में हाल ही में हुई खोजों ने इस समयसीमा को पीछे बढ़ाकर 3345 ईसा पूर्व तक ले जाया है।

वैदिक युग से संबंध:

- अधिकांश वैदिक काल (ऋग्वेद के प्रारंभिक चरण को छोड़कर) भारतीय लौह युग के दौरान ही आता है, जो 12वीं से 6वीं सदी ईसा पूर्व के बीच फैला हुआ है।

लौह युग में तकनीकी प्रगति:

- लौह युग ने तांबा-कांस्य युग के बाद धातुकर्म में बड़ी प्रगति दर्ज की।
- लोहे के गलने के लिए 1534°C तापमान तक पहुंचने वाली उन्नत भट्टियों की आवश्यकता होती थी।

पुरातात्विक साक्ष्य

- **उत्तर भारत:** प्रारंभिक लौह उपयोग का संबंध पेंटेड ग्रे वेयर (PGW) संस्कृति से था।
  - प्रमुख स्थल: हस्तिनापुर, कौशांबी, उज्जैन।
- **मध्य और दक्कन भारत:**
  - यहाँ ब्लैक एंड रेड वेयर (BRW) स्तरों में लौह अवशेष मिले हैं।
  - प्रमुख स्थल: नागदा, एरण, प्रकाश।
- **दक्षिण भारत:**
  - यहाँ लौह वस्तुएं नवपाषाण और महापाषाण काल के मेल के दौरान पाई गईं।

शहरीकरण और कृषि में भूमिका:

- लौह उपकरण जैसे कुल्हाड़ी और हल का उपयोग वनों की सफाई और कृषि विस्तार में हुआ।
- इसने गंगा घाटी में द्वितीय शहरीकरण (800–500 ईसा पूर्व) को बढ़ावा दिया।

खोजों का महत्व:

- **वैश्विक दृष्टिकोण:** तमिलनाडु में प्रारंभिक लौह उपयोग ने इस धारणा को चुनौती दी है कि लौह प्रौद्योगिकी केवल पश्चिम से फैली थी।
- **तकनीकी प्रगति:**
  - यह खोज दक्षिण भारत की उन्नत धातुकर्म क्षमता को दर्शाती है।
  - लौह उपकरणों ने कृषि विस्तार, वन सफाई और भूमि सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- **आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन:** लोहे के उपकरणों के व्यापक उपयोग ने व्यापार, परिवहन और संचार में क्रांति ला दी, जिससे समृद्धि और सामाजिक विकास हुआ।
- **सैन्य नवाचार:** लौह आधारित लंबी तलवारें, कृपाण, ढाल और भाले अधिक प्रभावी युद्ध रणनीतियों का आधार बने, जिससे रक्षा प्रणाली में सुधार हुआ।

भारत में जंगल में आग लगने की घटनाएँ / Forest Fire Incidents in India

संदर्भ:

पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के ताजा आंकड़ों के अनुसार, **पिछले पांच मौसमों (2019-2024)** में भारत में दर्ज कुल वनाग्नि (Forest Fire) घटनाओं का लगभग **50%** केवल पांच राज्यों से है। इन राज्यों में **5 लाख से अधिक वनाग्नि (Forest Fire) की घटनाएं** रिपोर्ट की गई हैं, जो पर्यावरण और पारिस्थितिकी पर गंभीर प्रभाव डालती हैं।

भारत में जंगल की आग - प्रमुख तथ्य:

- **राष्ट्रीय आपदा के रूप में मान्यता:**
  - 2019 में, राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (NDMA) ने जंगल की आग को राष्ट्रीय आपदाओं में शामिल किया।
- **संवेदनशील वन क्षेत्र:**
  - ISFR 2021 रिपोर्ट के अनुसार, देश के 36% वन क्षेत्र नवंबर से जून के बीच बार-बार आग लगने के प्रति संवेदनशील हैं।
  - इनमें से 2.81% क्षेत्र अत्यधिक अग्नि-प्रवण और 7.85% बहुत उच्च अग्नि-प्रवण श्रेणी में आते हैं।
- **सबसे अधिक प्रभावित राज्य (2019-2024):**
  - ओडिशा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और आंध्र प्रदेश में 50% जंगल की आग की घटनाएं दर्ज की गईं।
- **2023-24 में सबसे अधिक घटनाएं:**
  - उत्तराखंड, ओडिशा और छत्तीसगढ़ शीर्ष तीन राज्य रहे जहां सबसे अधिक आग की घटनाएं हुईं।

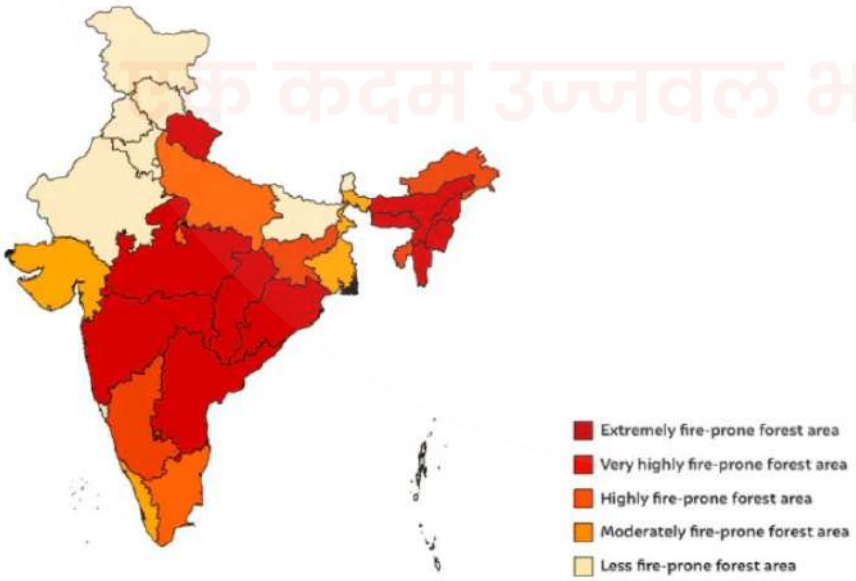

भारत में जंगल की आग के कारण:

1. प्राकृतिक कारण:

- **बिजली गिरना:** आकाशीय बिजली जब सूखी पत्तियों या अन्य ज्वलनशील पदार्थों पर गिरती है, तो आग भड़क सकती है।
- **ज्वालामुखी विस्फोट:** लावा बहकर जंगलों में फैलता है और आग लगने का कारण बनता है।
- **उच्च तापमान:** गर्म और शुष्क मौसम, साथ ही घने जंगल, आग फैलाने में सहायक होते हैं।

2. मानवजनित कारण: जलती हुई बीड़ी, सिगरेट, खुली आग, बिजली के तारों से निकली चिंगारी आदि से जंगल में आग लग सकती है।

भारत में जंगल की आग का प्रभाव:

1. **जैव विविधता का नुकसान:** वनस्पति, पेड़-पौधों और जीव-जंतुओं को भारी नुकसान।
2. **मिट्टी का कटाव:** मिट्टी खुली रहने से उपजाऊ परत बह जाती है।
3. **मिट्टी की उर्वरता में कमी:** मिट्टी का जैविक पदार्थ और नाइट्रोजन भंडार नष्ट।
4. **झूम खेती पर असर:** छोटे झूम चक्र से मिट्टी की उर्वरता घटती है।
5. **वन्यजीवों को नुकसान:** आवास नष्ट होने से शिकार और मृत्यु का खतरा।
6. **वायु प्रदूषण:** हानिकारक गैसों और धुएं का उत्सर्जन।
7. **जलवायु परिवर्तन:** कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन से पर्यावरण प्रभावित।

भारत में जंगल की आग रोकने के लिए उठाए गए कदम:

1. **राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन योजना (NDMP) 2019:** संशोधित NDMP 2019 में जंगल की आग को एक आपदा के रूप में शामिल किया गया।
2. **फॉरेस्ट फायर अलर्ट सिस्टम:** 2004 से FSI ने जंगल की आग की रीयल-टाइम निगरानी के लिए यह प्रणाली विकसित की।
   - जनवरी 2019 में उन्नत संस्करण NASA और ISRO से प्राप्त उपग्रह डेटा का उपयोग करता है।
3. **फायर वेदर इंडेक्स आधारित प्रणाली (FFDRS):** आग के लिए संवेदनशील क्षेत्रों की पहचान।
   - जोखिम कम करने और संसाधन आवंटन में मदद।
4. **वन अग्नि जियो-पोर्टल:** भारत में जंगल की आग से संबंधित जानकारी के लिए एकल स्रोत के रूप में कार्य करता है।
5. **राष्ट्रीय वन अग्नि कार्य योजना (NAPFF):** 2018 में MoEF&CC द्वारा शुरू की गई।
   - जंगल की आग को कम करने के लिए समुदायों को जानकारी देना, सशक्त बनाना और उन्हें प्रोत्साहित करना।

अमेरिका में CBDC पर प्रतिबंध / Ban on CBDC in the US

संदर्भ:

हाल ही में, अमेरिकी राष्ट्रपति ने एक कार्यकारी आदेश के माध्यम से केंद्रीय बैंक डिजिटल मुद्रा (CBDC) के निर्माण और उपयोग पर प्रतिबंध लगा दिया है।

CBDC के बारे में:

1. **परिभाषा:**
   - CBDC (सेंट्रल बैंक डिजिटल करेंसी) एक देश की संप्रभु मुद्रा का डिजिटल रूप है, जिसे केंद्रीय बैंक द्वारा जारी और नियंत्रित किया जाता है।
   - क्रिप्टोकरेंसी के विपरीत, जो विकेंद्रीकृत होती है, CBDC केंद्रीय रूप से प्रबंधित होती है और इसे सरकार द्वारा समर्थित किया जाता है।

Central Bank Digital Currency (CBDC)

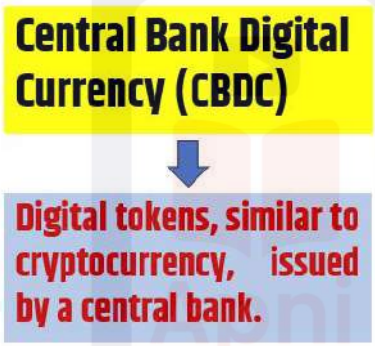

↓

Digital tokens, similar to cryptocurrency, issued by a central bank.

2. **CBDC के प्रकार:**
   - **थोक CBDC (Wholesale CBDC):** यह संस्थागत उपयोग के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो बड़े पैमाने पर लेन-देन जैसे इंटरबैंक ट्रांसफर, क्रॉस-बॉर्डर भुगतान, और सिक्योरिटी निपटान को सुगम बनाता है।
   - **खुदरा CBDC (Retail CBDC):**
     - यह व्यक्तिगत और व्यवसायों के रोज़मर्रा के उपयोग के लिए होता है।
     - उदाहरण:
       - **टोकन-आधारित:** निजी और सार्वजनिक कुंजी के साथ एक्सेस किया जाता है।
       - **खाता-आधारित:** डिजिटल पहचान की आवश्यकता होती है।
3. **CBDC की विशेषताएँ:**
   - **कानूनी मुद्रा:** इसे सभी नागरिकों, व्यवसायों और सरकारी एजेंसियों द्वारा भुगतान और मूल्य के भंडारण के रूप में मान्यता प्राप्त होती है।
   - **दायित्व:** यह केंद्रीय बैंक की सीधे दायित्व के रूप में होता है, जबकि वाणिज्यिक बैंकों में जमा राशि के मुकाबले।

अमेरिका में CBDC पर प्रतिबंध के कारण:

1. **विकेन्द्रीकरण का समर्थन:**
   - सरकार स्थिर मुद्रा जैसे निजी क्षेत्र के डिजिटल संपत्तियों में नवाचार को बढ़ावा देना चाहती है, जो CBDC के मुकाबले विकेन्द्रीकृत होते हैं।
2. **गोपनीयता की चिंताएँ:**
   - CBDC से सरकार को व्यक्तिगत लेन-देन पर निगरानी रखने की क्षमता मिल सकती है, जो गोपनीयता के अधिकार का उल्लंघन कर सकता है।
3. **वित्तीय संप्रभुता:**
   - CBDC को लागू करने से वित्तीय प्रणाली के केंद्रीकरण का खतरा है, जो संघीय सरकार के नियंत्रण में आ सकता है।

भारत में CBDC पहल - RBI की डिजिटल मुद्रा e-Rupee (e₹)

1. परिचय:

- भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) द्वारा वर्ष 2022 में शुरू की गई।
- यह भारतीय रुपये का डिजिटल संस्करण है और इसे समान मूल्य पर नकदी के साथ बदला जा सकता है।

2. उपयोग:

- **e-Rupee (e₹)** को बैंकों और गैर-बैंकों द्वारा प्रदान किए गए डिजिटल वॉलेट्स में संग्रहीत और लेनदेन किया जा सकता है।
- इसका उपयोग व्यक्ति-से-व्यक्ति (P2P) और व्यक्ति-से-व्यापारी (P2M) भुगतान के लिए किया जा सकता है।

लाउडस्पीकर का उपयोग धर्म के लिए आवश्यक नहीं (बॉम्बे हाई कोर्ट) / Use of Loudspeakers is Not Essential to Religion

संदर्भ:

बॉम्बे हाई कोर्ट ने हाल ही में महाराष्ट्र सरकार को निर्देश दिया कि वह लाउडस्पीकरों में डेसिबल स्तरों को नियंत्रित करने के लिए एक अंतर्निहित तंत्र विकसित करे। कोर्ट ने यह भी कहा कि लाउडस्पीकरों का उपयोग किसी भी धर्म का अनिवार्य हिस्सा नहीं है।

न्यायिक टिप्पणियाँ:

- कोर्ट ने कहा कि लाउडस्पीकरों का उपयोग किसी भी धर्म का अनिवार्य हिस्सा नहीं है और यह संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत संरक्षित नहीं है।

लाउडस्पीकर और ध्वनि विस्तारक प्रणाली (PAS) पर कानूनी स्थिति:

1. **मौलिक अधिकार नहीं:**
   - लाउडस्पीकर और सार्वजनिक संबोधन प्रणाली (PAS) का उपयोग आवश्यक धार्मिक प्रथा नहीं माना जा सकता जिसे कानून द्वारा संरक्षित किया जाए।
2. **महत्वपूर्ण न्यायालय निर्णय:**
   - 2016 में *डॉ. महेश विजय बेडेकर बनाम महाराष्ट्र* मामले में बॉम्बे हाईकोर्ट ने ध्वनि प्रदूषण (विनियमन और नियंत्रण) नियमों के सख्त अनुपालन का निर्देश दिया था।
3. **ध्वनि प्रदूषण नियम, 2000:**
   - आवासीय क्षेत्रों में ध्वनि स्तर दिन में 55 डेसिबल और रात में 45 डेसिबल से अधिक नहीं होना चाहिए।

इस फैसले से सार्वजनिक स्थानों पर ध्वनि प्रदूषण को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी और नागरिकों के शांतिपूर्ण जीवन के अधिकार को सुनिश्चित किया जाएगा।

Essential Religious Practices Doctrine (ERP):

- यह सिद्धांत संविधान के **अनुच्छेद 25 और 26** के तहत धार्मिक स्वतंत्रता और राज्य के नियमों के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए सुप्रीम कोर्ट द्वारा विकसित किया गया था।
- केवल वे धार्मिक प्रथाएं जिन्हें किसी विशेष धर्म के लिए आवश्यक माना जाता है, वे ही इसे संरक्षित कर सकती हैं।

1. **मुख्य विशेषताएँ:**
   - **धार्मिक स्वतंत्रता:** केवल वे प्रथाएँ जो किसी धर्म के लिए आवश्यक मानी जाती हैं, उन्हें संविधान में दी गई धार्मिक स्वतंत्रता के तहत संरक्षण प्राप्त है।
   - **राज्य का भूमिका:** राज्य को सामाजिक सुधार लागू करने की अनुमति है, बशर्ते वे आवश्यक धार्मिक प्रथाओं पर हस्तक्षेप न करें।
   - **प्रथाओं का विभाजन:** यह सिद्धांत आवश्यक और गैर-आवश्यक धार्मिक प्रथाओं के बीच अंतर करता है, और केवल आवश्यक प्रथाओं को सुरक्षा प्रदान करता है।
2. **ऐतिहासिक संदर्भ:**
   - **पहला उल्लेख:** इस सिद्धांत का पहला उल्लेख 1954 में The Commissioner, Hindu Religious Endowments, Madras v. Sri Lakshmindra Thirtha Swamiar of Sri Shirur Mutt मामले में हुआ।
   - **आलोचना:** इस सिद्धांत की व्याख्या में असंगतता और अस्थिरता की आलोचना की गई है।
3. **प्रमुख उदाहरण:**
   - **Durgah Committee, Ajmer v. Syed Hussain Ali (1961):** कोर्ट ने यह निर्णय दिया कि केवल वे प्रथाएँ जो किसी धर्म के लिए आवश्यक और अभिन्न हैं, उन्हें ही संरक्षण प्राप्त है।
   - **Ismail Faruqui v. Union of India (1994):** कोर्ट ने यह निर्णय दिया कि मस्जिद इस्लाम के लिए एक आवश्यक प्रथा नहीं है।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 25:

अनुच्छेद 25 प्रत्येक व्यक्ति को अंतरात्मा की स्वतंत्रता और धर्म की स्वतंत्र अभिव्यक्ति, आचरण और प्रचार का अधिकार प्रदान करता है।

मुख्य बिंदु:

1. **अंतरात्मा की स्वतंत्रता:** किसी व्यक्ति को अपनी अंतरात्मा के अनुसार भगवान या किसी अन्य शक्ति के साथ अपने संबंधों को निर्धारित करने की स्वतंत्रता।
2. **व्यक्त करने का अधिकार (Right to Profess):** अपने धार्मिक विश्वासों और आस्था को खुले तौर पर व्यक्त करने और घोषित करने का अधिकार।
3. **आचरण का अधिकार (Right to Practice):** धार्मिक उपासना, अनुष्ठान, समारोह और विश्वासों को लागू करने का अधिकार।
4. **प्रचार करने का अधिकार (Right to Propagate):** अपने धार्मिक विश्वासों का प्रचार और प्रसार करने, या अपने धर्म के सिद्धांतों को दूसरों तक पहुँचाने का अधिकार।

सीमाएं (Restrictions):

- ये अधिकार सार्वजनिक व्यवस्था, नैतिकता, स्वास्थ्य और अन्य मौलिक अधिकारों के अधीन हैं।
- राज्य को धार्मिक प्रथाओं से जुड़े आर्थिक, वित्तीय, राजनीतिक या अन्य धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों को विनियमित या प्रतिबंधित करने की अनुमति है।

राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक / Fiscal Health Index - FHI

संदर्भ:

16वें वित्त आयोग के अध्यक्ष, डॉ. अरविंद पनगढ़िया, ने नीति आयोग की रिपोर्ट **"राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (Fiscal Health Index - FHI) 2025"** का उद्घाटन संस्करण जारी किया।

राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (Fiscal Health Index - FHI) :

परिचय:

- नीति आयोग (NITI Aayog) द्वारा राज्यों की वित्तीय स्थिति का आकलन करने और सतत आर्थिक विकास के लिए सुधारों का मार्गदर्शन करने के उद्देश्य से वित्तीय स्वास्थ्य सूचकांक (Fiscal Health Index - FHI) शुरू किया गया है।
- यह सूचकांक राज्यों की वित्तीय सेहत को मापने के लिए एक समग्र सूचकांक (Composite Index) का उपयोग करता है, जो विभिन्न वित्तीय मानकों पर आधारित है।

प्रमुख घटक (Sub-Indices):

FHI को पाँच प्रमुख उप-सूचकांकों के आधार पर मूल्यांकित किया जाता है:

1. **व्यय की गुणवत्ता (Quality of Expenditure):**
   - सार्वजनिक व्यय की प्रभावशीलता और प्राथमिकता को दर्शाता है।
2. **राजस्व संग्रहण (Revenue Mobilization):**
   - राज्यों की आंतरिक संसाधन जुटाने की क्षमता का आकलन करता है।
3. **राजकोषीय अनुशासन (Fiscal Prudence):**
   - व्यय और राजस्व के संतुलन पर ध्यान केंद्रित करता है।
4. **ऋण सूचकांक (Debt Index):**
   - राज्यों के ऋण स्तर और उनकी प्रबंधन रणनीतियों का आकलन करता है।
5. **ऋण स्थिरता (Debt Sustainability):** राज्यों की ऋण चुकाने की क्षमता और दीर्घकालिक वित्तीय स्थिरता को मापता है।

डेटा स्रोत:

- रिपोर्ट के लिए 2022-23 के आंकड़े भारत के नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक (CAG) से लिए गए हैं।
- 2014-15 से 2021-22 तक की प्रवृत्तियों (trends) को भी विश्लेषण में शामिल किया गया है।

व्यापक कवरेज:

- यह सूचकांक उन राज्यों को कवर करता है जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद (GDP), जनसांख्यिकी, सार्वजनिक व्यय और राजस्व में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

राजकोषीय स्वास्थ्य सूचकांक (FHI) रिपोर्ट 2025 :

शीर्ष प्रदर्शन करने वाले राज्य:

- **ओडिशा:** 67.8 FHI स्कोर के साथ पहला स्थान प्राप्त किया।
- **छत्तीसगढ़:** दूसरा स्थान।
- **गोवा:** तीसरा स्थान।

पंजाब, केरल और पश्चिम बंगाल जैसे राज्य ऋण स्थिरता और राजस्व जुटाने में चुनौतियों का सामना कर रहे हैं, जिससे वित्तीय सुधारों की आवश्यकता उजागर होती है।

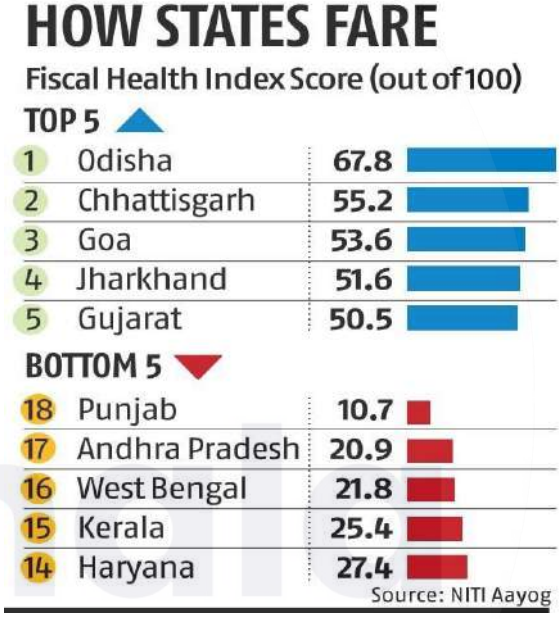

महत्व (Significance):

1. **आर्थिक अनुशासन को बढ़ावा:** डेटा-आधारित जानकारियों के माध्यम से वित्तीय अनुशासन को प्रोत्साहित करता है।
2. **राज्य-विशेष सुधारों का मार्गदर्शन:** विभिन्न राज्यों के बीच असमानताओं को दूर करने के लिए राज्य-विशेष सुधारों का सुझाव देता है।
3. **स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करता है:** राज्यों के बीच आर्थिक प्रगति के लिए सकारात्मक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है।
4. **सहकारी संघवाद का समर्थन:** "विकसित भारत @2047" के लक्ष्य के साथ तालमेल बिठाते हुए केंद्र और राज्यों के बीच सहयोग को बढ़ावा देता है।
5. **निरंतर सुधार हेतु वार्षिक समीक्षा:** राज्यों की वित्तीय स्थिति को हर साल ट्रैक करता है ताकि लगातार सुधार किया जा सके।

76वां गणतंत्र दिवस / 76th Republic Day

संदर्भ:

गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को मनाया जाता है, क्योंकि इसी दिन 1950 में भारत का संविधान लागू हुआ था। इसके साथ ही भारत ने स्वयं को एक संप्रभु, लोकतांत्रिक और गणराज्य राज्य घोषित किया।

- इस साल 2025 में भारत **76वां गणतंत्र** दिवस मनाने जा रहा है।

गणतंत्र दिवस 2025: मुख्य बिंदु:

1. **थीम:**
   - इस वर्ष गणतंत्र दिवस की थीम है **"स्वर्णिम भारत: विरासत और विकास"** (Golden India: Legacy and Progress), जो भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और उज्जवल भविष्य को दर्शाती है।
2. **मुख्य अतिथि:**
   - इस वर्ष गणतंत्र दिवस समारोह के मुख्य अतिथि **इंडोनेशिया के राष्ट्रपति प्रभवो सुबियांतो** होंगे।
   - वे चौथे इंडोनेशियाई राष्ट्रपति हैं जो भारत के गणतंत्र दिवस समारोह में शामिल होंगे।

झांकियां (Tableaux):

- इस वर्ष परेड में **31 झांकियां** भाग लेंगी।
- संविधान के 75 वर्षों की यात्रा, **भगवान बिरसा मुंडा की 150वीं जयंती**, सरदार पटेल और भारत मौसम विज्ञान विभाग से जुड़ी झलकियां शामिल होंगी।

भारत पर्व (Bharat Parv):

- **26 से 31 जनवरी 2025** तक **लाल किले** पर आयोजित किया जाएगा।
- इसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम, हस्तशिल्प प्रदर्शनी और पूरे भारत के व्यंजन मिलेंगे।

वीर गाथा 4.0:

- **16 सितंबर से 31 अक्टूबर 2024** के बीच आयोजित किया गया।
- इसका उद्देश्य बच्चों को सेना के वीरता भरे कार्यों और बलिदानों से प्रेरित करना था।

बीटिंग रिट्रीट समारोह:

- इस बार समारोह में **सिर्फ भारतीय धुनों** को बजाया जाएगा।
- इस कार्यक्रम में भारतीय सेना, नौसेना और वायुसेना के बैंड भाग लेंगे।

26 जनवरी का ऐतिहासिक महत्व:

- **1930 का पूर्ण स्वराज दिवस**- 26 जनवरी, 1930 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने **पूर्ण स्वराज की घोषणा** की थी। इस दिन को पूरे देश में स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया गया था।
- **संविधान सभा**- भारत की आजादी के बाद, संविधान सभा ने देश का संविधान बनाने का काम शुरू किया। संविधान को **26 नवंबर, 1949 को अपनाया गया और 26 जनवरी, 1950** को लागू किया गया।
  - इस दिन देश को एक **संप्रभु, लोकतांत्रिक गणराज्य** घोषित किया गया था.
- **प्रतीकात्मक महत्व**- 26 जनवरी को संविधान लागू करके, भारत ने **ब्रिटिश शासन से मुक्ति** के अपने संघर्ष को पूरा किया और एक नए युग का सूत्रपात किया। इस दिन को चुनकर, देश ने **1930 के पूर्ण स्वराज दिवस को भी याद किया।**

गणतंत्र दिवस का महत्व:

- **लोकतंत्र का जश्न**- गणतंत्र दिवस भारत के लोकतांत्रिक मूल्यों का जश्न मनाता है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि हम सभी बराबर हैं और देश के शासन में हमारी भागीदारी है।
- **राष्ट्रीय एकता**- यह दिन देश की विभिन्न जातियों, धर्मों और संस्कृतियों को एकजुट होने का अवसर प्रदान करता है।
- **संविधान का महत्व**- गणतंत्र दिवस हमें हमारे संविधान के महत्व को याद दिलाता है, जो हमारे अधिकारों और कर्तव्यों को परिभाषित करता है।

गणतंत्र दिवस कैसे मनाया जाता है

- **कर्तव्य पथ पर परेड**- गणतंत्र दिवस पर कर्तव्य पथ पर एक भव्य परेड आयोजित की जाती है, जिसमें सशस्त्र बल, विभिन्न राज्यों की झांकियां और सांस्कृतिक कार्यक्रम शामिल होते हैं।
- **राष्ट्रीय ध्वजारोहण**- इस दिन कर्तव्य पथ पर राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है और 21 तोपों की सलामी दी जाती है।
- **सांस्कृतिक कार्यक्रम**- देश भर में विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

"GET READY FOR A WILD RIDE OF KNOWLEDGE !"

SUBSCRIBE OUR NEW YOUTUBE CHANNEL

ANKIT AVASTHI

Video will be upload soon !

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per
Year
Buy Now

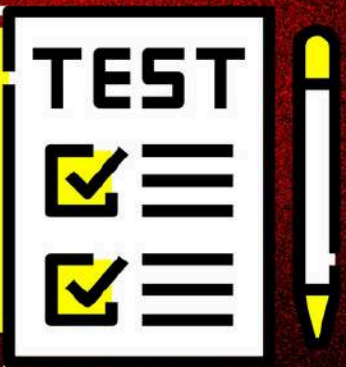

GA FOUNDATION

Hand Written Notes

Apni Pathshala
एक कदम उज्ज्वल भविष्य की ओर

Ankit Inspires India

₹ Only 1999

4 पुस्तकों का सम्पूर्ण सेट

अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....

7878158882

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application

Apni Pathshala

7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit

AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

NCERT COMPLETE

FOUNDATION BATCH

FOR ALL

- POLITY
- ECONOMICS
- HISTORY
- GEOGRAPHY

- DAILY LIVE CLASSES
- , WEEKLY TEST
- CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
- LIVE DOUBT SESSIONS
- DAILY PRACTISE PROBLEM

Rs 4999/-

Apni Pathshala 7878158882 Apni.Pathshala kaankit AnkitAvasthiSir Avasthiankit

ONLY
POLITY
1499
RS
DAILY LIVE CLASSES
, WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTISE PROBLEM
Apni Pathshala 7878158882
Apni.Pathshala
kaankit
AnkitAvasthiSir
Avasthiankit

SSC TEST SERIES

CGL, CHSL, MTS, CET, CPO, GD,

Stenographer (Grades C & D)

Only at

99/-Year

Enroll Now !